दो विलो वृक्षों का उपहार

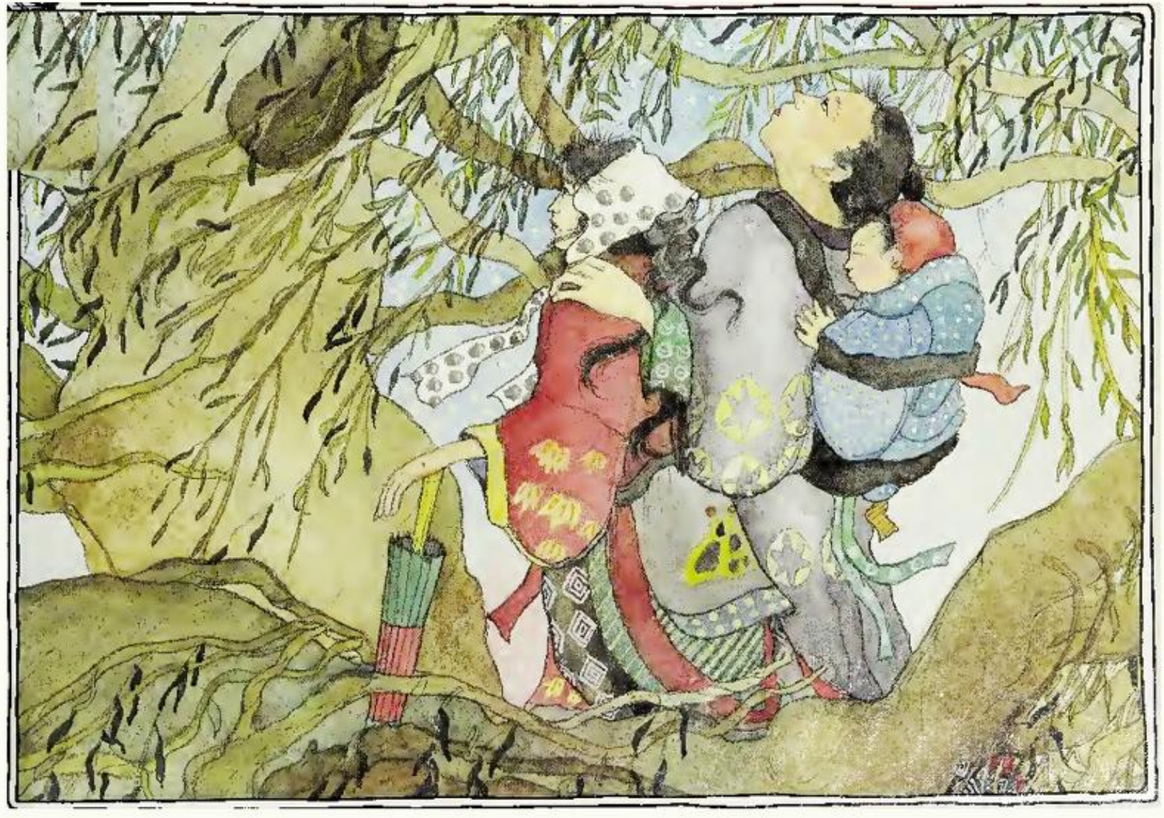

हेलेना क्लेयर पिटमैन

दो विलो वृक्षों का उपहार

हेलेना क्लेयर पिटमैन

शिन्जो गाँव का युकियो ताकासामा एक कुम्हार था. उसका कारखाना एक पहाड़ी की चोटी पर थी, जिसके एक ओर ओकायामा नदी बह रही थी और दूसरी तरफ सागर था. हर दिन सुबह के समय युकियो जब नदी किनारे से मिट्टी खोदता तो वह कल्पना करता कि उस मिट्टी से वह कौन-कौन से बर्तन बनायेगा, 'इस मिट्टी से चाय की केतली बनेगी और इससे शराब की बोतल.'

अपने कारखाने पर लौट कर वह मिट्टी को नर्म और मुलायम बनाने के लिए उसे नंगे पाँव से रौंदता. फिर मिट्टी के एक ढेर को अपने चाक के बीच में रख कर चाक को घुमाता. वह चाक को तेज़, और तेज़ घुमाता. ऐसा लगता कि जैसे चाक नृत्य कर रहा था. उसकी उंगलियों के नीचे मिट्टी का ढेर का आकार बदलने लगता, जैसे कि उस पर जादू किया जा रहा हो. अंततः मिट्टी एक सुंदर जार या फूलदान या तश्तरी का आकार ले लेती. उस आकृति को वह तंदूर में तब तक तपाता जब तक कि वह पत्थर के समान सख्त नहीं हो जाती थी.

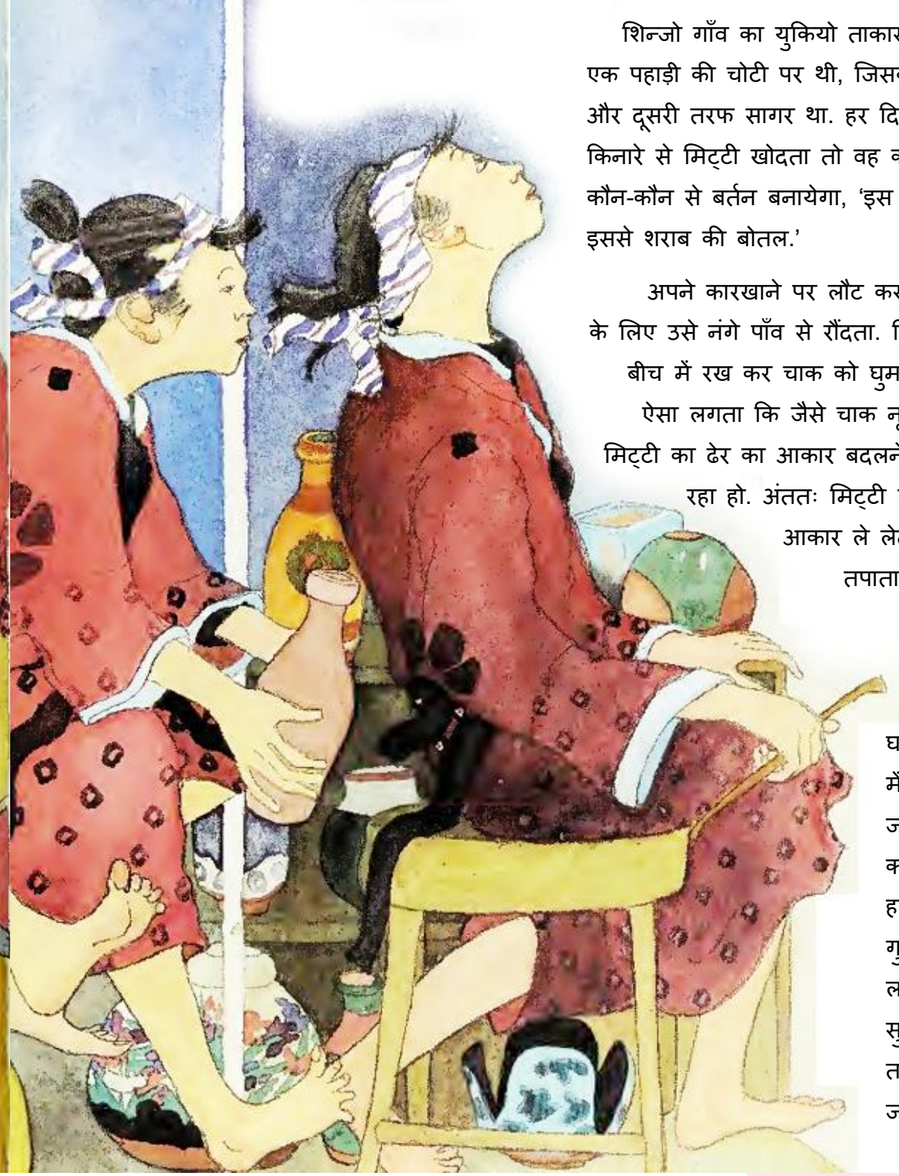

उसके कारखाने के पास ही युकियो का घर था. उसकी दुकान भी वहीं थी. दुकान में लकड़ियों के शेल्फों पर रखे मटके और जार और कटोरे खरीददारों की प्रतीक्षा करते थे. सब कुछ युकियो ने स्वयं अपने हाथों से बनाया था. संध्या के समय जब गुलाबी चांद सागर के ऊपर दिखाई देने लगता और आलूबुखारों के फूलों की सुगन्ध तैरती हुई पहाड़ी के ऊपर आती तब युकियो संतुष्टि की अनुभूति से भर जाता था.

“जीवन में कितना आनंद है,” वह तारों से कहता. कई बार आनंद के अतिरेक से उसके मन में इच्छा उत्पन्न कि वह अपनी प्रसन्नता किसी के साथ बाँटे.

फिर उसकी भेंट कुरा से हुई, जो चावल के व्यापारी, सामाहिरा की बेटी थी. युकियो ने उससे विवाह कर लिया और उसके जीवन में सुख की कोई कमी न रही.

कुरा उसके जीवनचर्या में ऐसे घुल मिल गई जैसे कि वह सदा से उसके साथ उस पहाड़ी पर रह रही थी. युकियो ने उसे मिट्टी की वस्तुयें बनाना सिखाया. शीघ्र ही उसकी दुकान की खिड़कियों पर कुरा की बनाईं मिट्टी का घंटियाँ और चाइम्स लटक रही थीं. सागर से आती हवा में उनकी झंकार बहुत सुरीली और मधुर लगती थी. कभी-कभी कुरा अपने कोटो (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) को बजाते हुए, कोई गीत गाकर युकियो को सुनाती.

विवाह से पहले अगर युकियो बहुत संतुष्ट था तो अब प्रसन्नता से उसका मुखड़ा उदय हो रहे सूर्य के समान दमकता था.

“जीवन आनंद है,” उसने पेड़ों को धीमे से कहा.

दिन पर दिन बीते. एक सुबह युकियो ने अपने मटके नदी किनारे रखे और मिट्टी खोदने लगा. उसने लाल, मुलायम मिट्टी खोदी और अपने मटकों में भर ली. जब सारे मटके पूरी तरह भर गये तो वह बैठ कर थोड़ा आराम करने लगा और धीरे-धीरे बहती ओकायामा के बुदबुदाते पानी को देखने लगा. नदी के पानी से टकरा कर सूर्य का प्रकाश आसपास लगे पेड़ों के पत्तों को प्रज्वलित कर रहा था.

"यह स्थान कितना सुंदर है!" युकियो ने अपने आप से कहा. उसे असीम शांति की अनुभूति हो रही थी. तभी उसकी दृष्टि विलो के दो छोटे कोमल पौधों पर पड़ी जो नदी किनारे उग रहे थे. वह नन्हे पौधे गर्व के साथ ऐसे सीधे खड़े थे जैसे वह विशाल पेड़ हों. उनकी गरिमा देख कर युकियो प्रभावित हुआ लेकिन उनके प्रति उसके मन में ममता भी उपजी क्योंकि उसे विश्वास था कि यह नन्हे पौधे वसंत की वर्षा को सह न पायेंगे और उखड़ जायेंगे. लेकिन वसंत की एक सुबह उसने उन पौधों को फिर देखा. वह बहुत ऊँचे हो गये थे और पत्तों से भरे हुए थे. उन्हें देखकर उसे बहुत प्रसन्नता हुई और लौटते समय वह सारे रास्ते मुस्कराता रहा.

माह पर माह बीते. युकियो की बनाईं मिट्टी की वस्तुयें अब अधिक सुंदर हो गई थीं और कुरा की बनाईं घंटियों और चाइम्स की ध्वनि अधिक मधुर हो गई थी. उनके जीवन में इतना आनंद था कि वह अपनी खुशियाँ बांटने को आतुर हो रहे थे. एक शिशु पाने की कामना उनके मन में बहुत तीव्र हो गई थी.

शरद ऋतु में एक दिन अपना काँवर उठाते समय युकियो फिसल गया. अपने को संभालने का प्रयास किया और एक छोटे पौधे को पकड़ कर अपने को गिरने से बचाया. निकट ही एक दुसरा पौधा था. विलो के दोनों पौधों को वह तुरंत पहचान गया.

“तुम अभी भी यहीं हो!” उसने कहा. वह घर की ओर चल दिया. रास्ते भर वह पौधों का बारे में सोचता रहा कि वह कितने बड़े हो गए थे. भारी वज़न उठाने के बावजूद वह तेज़ी से चल रहा था.

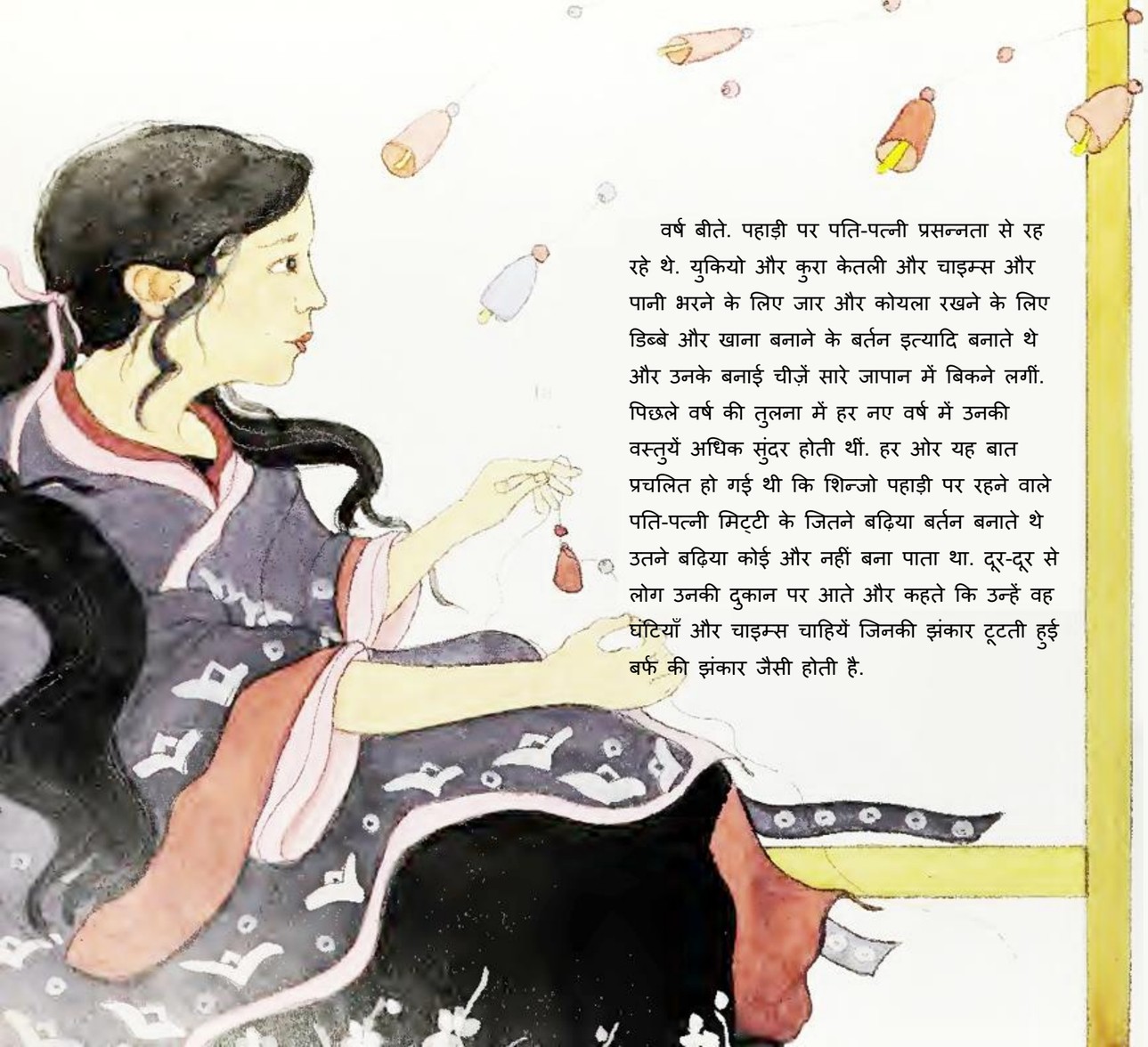

वर्ष बीते. पहाड़ी पर पति-पत्नी प्रसन्नता से रह रहे थे. युकियो और कुरा केतली और चाइम्स और पानी भरने के लिए जार और कोयला रखने के लिए डिब्बे और खाना बनाने के बर्तन इत्यादि बनाते थे और उनके बनाई चीज़ें सारे जापान में बिकने लगीं. पिछले वर्ष की तुलना में हर नए वर्ष में उनकी वस्तुयें अधिक सुंदर होती थीं. हर ओर यह बात प्रचलित हो गई थी कि शिन्जो पहाड़ी पर रहने वाले पति-पत्नी मिट्टी के जितने बढ़िया बर्तन बनाते थे उतने बढ़िया कोई और नहीं बना पाता था. दूर-दूर से लोग उनकी दुकान पर आते और कहते कि उन्हें वह घंटियाँ और चाइम्स चाहियें जिनकी झंकार टूटती हुई बर्फ की झंकार जैसी होती है.

हर वर्ष शरद ऋतु में विलों के पेड़ों के पत्ते झर कर धरती पर एक नर्म कालीन के समान बिछ जाते थे और मिट्टी इकट्ठी करने के बाद युकियो उस कालीन पर बैठ जाता था. विलो के पेड़ अब इतने बड़े और मज़बूत हो गए थे कि युकियो एक पेड़ के तने के साथ पीठ लगा कर बैठ जाता था और ठंडी हवा में आराम करता था. कभी-कभी वह अपने मन के विचार उन पेड़ों का बताता था. अब जब भी वह मिट्टी लेने के लिए नदी किनारे जाता था तो उन दोनों पेड़ों का मित्रों समान अभिवादन करता था.

समय बीता लेकिन युकियो और कुरा की कोई संतान न हुई. फिर एक ऐसी वसंत ऋतु आई कि आकाश में कहीं बादल दिखाई न दिए. मिट्टी सूख कर भुरभुराने लगी. खेतों में उपज सूख गई और धान की कोंपलें मुरझा गईं. लोग वर्षा के लिए देवताओं से प्रार्थना करने लगे पर वर्षा नहीं हुई. नर्म मिट्टी पाने के लिए युकियो को हर दिन नदी किनारे सख्त ज़मीन में और अधिक गहराई में खुदाई करनी पड़ती. उसने मछलियों को मरते देखा. उसने गिलहरियों को भूख से तड़पते देखा.

नदी में पानी घटता गया. पानी गंदा और बदबूदार हो गया. लेकिन युकियो और कुरा को वही पानी भर कर लाना पड़ता. तपती धूप में वह मटके भर-भर कर धीरे-धीरे पहाड़ी के ऊपर अपने बगीचे में लेकर आते और पौधों को जीवित रखने के लिए उन पर पानी डालते. खाने के लिए वह बचा कर रखा हुआ धान और फलियों का उपयोग करते.

"जीवन बहुत कठोर है," आकाश में धूमिल चाँद को देख कर युकियो ने कहा. मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए उसके पास कम ही समय होता था, इसलिए मिट्टी लाने के लिए नदी किनारे कम ही जाता था. वह विलों के पेड़ों को भूल ही गया. एक दिन जब उसकी दृष्टि उन पर पड़ी दो उसने देखा कि वह दोनों सूख गये थे. किसी दैत्य की हड्डियों समान, पेड़ों की शाखायें नदी की तरफ लटक कर झूल रही थीं. उन डालों पर बहुत थोड़े पत्ते थे.

पेड़ों की दशा देख कर युकियो बहुत दुखी हुआ. पेड़ों ने वसंत की भारी वर्षा को और सर्दी की ठंडी हवाओं को सह लिया था. युकियो को लगा कि अगर शीघ्र ही वर्षा न हुई तो दोनों पेड़ निश्चय ही मर जायेंगे. इन पेड़ों की सुंदर डालें फिर कभी उसे सूर्य की गर्मी से बचा न पायेंगी. फिर वह कहाँ बैठ कर ओकायामा नदी के उस सुंदर गीत को सुनेगा जो गीत नदी सागर की ओर जाते हुए गाती थी? जब वह नदी किनारे मिट्टी खोदने आएगा तो कौन उसका स्वागत करेगा?

अचानक आशा की एक किरण उसके मन में जगी. वह उछल कर खड़ा हो गया और नदी की ओर चल दिया. उसने एक जार में पानी भरा और पेड़ों की जड़ों में पानी डाला. चिकने पत्थरों पर फिसलते हुए भी उसने पेड़ों की डालों पर उछाल कर पानी डाला. उनके मोटे तनों पर पानी डाला. अपनी कुदाल से पेड़ों के चारों ओर मिट्टी खोद कर उसने एक खाई बना दी. वह बार-बार नदी से मटके पानी से भर कर लाया और पेड़ों के आसपास तब तक पानी डालता रहा जब तक कि वह खाई भर न गई. अगले दिन भी उसने वैसा ही किया और उसके अगले दिन भी. और जब तक आकाश में बादल दिखाई नहीं दिए और वर्षा नहीं हुई तब तक वह प्रतिदिन पेड़ों की जड़ों को पानी देता रहा.

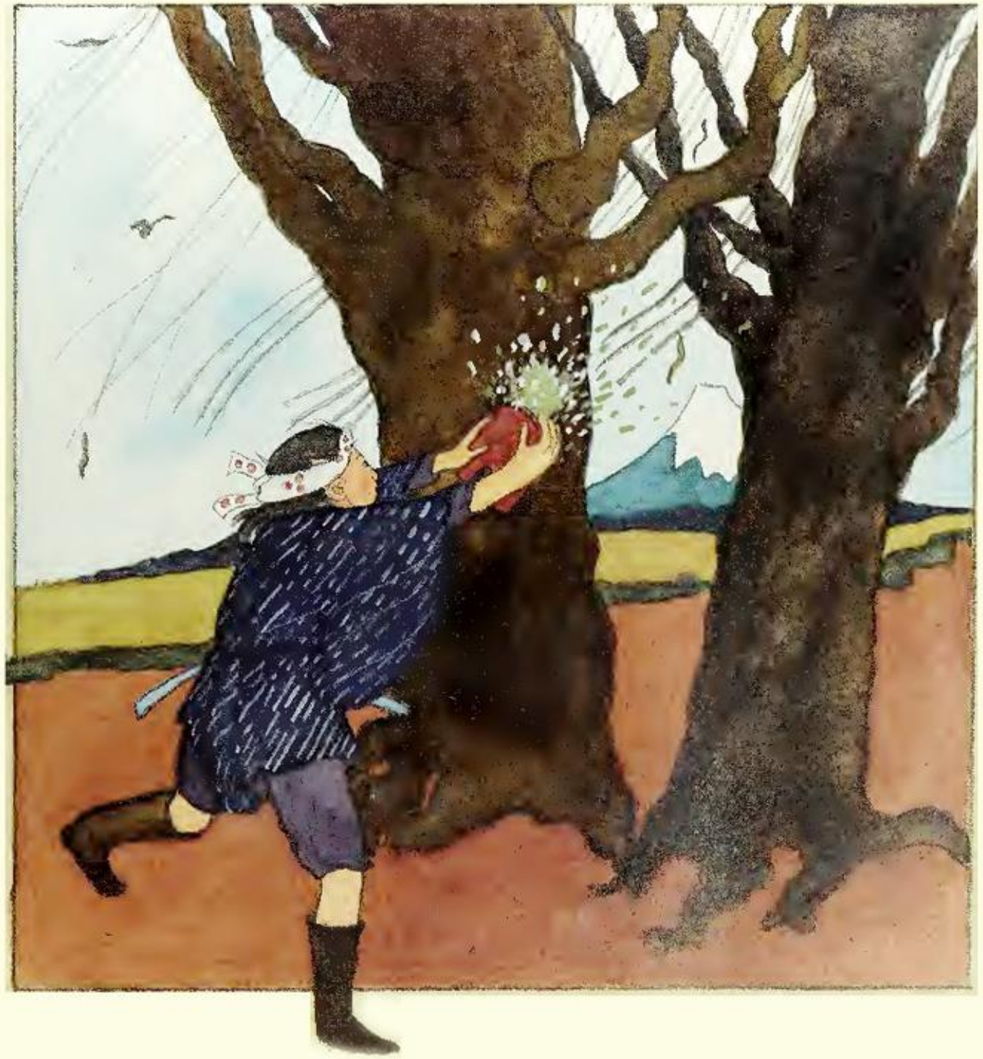

ओकायामा नदी के किनारों पर मरे हुए पेड़ों की कतारें थीं. लेकिन विलो के पेड़ों पर नये पत्ते निकल रहे थे. वसंत ऋतु आने तक दोनों पेड़ पत्तों से भर गए थे और नदी के ऊपर झूल रहे थे.

"युकियो-सेन," गर्मियों की एक दिन शाम के समय कुरा ने प्यार से कहा, "सर्दियों के समाप्त होने पर हमारा शिशु जन्म लेगा."

वर्षों की प्रतीक्षा के बाद ऐसी सुखद बात सुन युकियो खूब ज़ोर से हँसा. प्रसन्नता से पति-पत्नी देर रात तक नाचते रहे. कुरा ने आने वाले शिशु के लिए छोटे-छोटे कपड़े सिले. उसने घर में कई जगह पर घंटियाँ और चाइम्स बाँध दीं जिनकी झंकार की ध्वनि उनके दिलों को खुशियों से भर देती. युकियो ने हाथी-दाँत का एक सुंदर कंघा बनाया.

शरद ऋतु में युकियो जंगल में लकड़ियाँ काट-काट कर अपने घर में जमा करता रहा. फिर सर्दियों शुरु हुईं. ठंड़ी हवा तेज़ गति से चलती और घर की दीवारों से टकराती. सागर में लहरें उठतीं और बर्फ के तूफान में पहाड़ी छिप जाती. एक दिन युकियो ने पेड़ों के टूट कर नदी में गिरने की आवाज़ सुनी. तुफान से लड़ता हुआ वह पहाड़ी की चोटी तक आ गया. वह विलो के पेड़ों को देखना चाहता था. चोटी से उसने नदी की ओर देखा. उसे सिर्फ एक पेड़ दिखाई दिया जो तुफान के प्रभाव में झुका हुआ था. जब तुफान थमा तो युकियो ने देखा उसका घर तहस-नहस हो चुका था. दिन-रात काम कर के युकियो ने घर की दीवारों को ठीक किया ताकि कुरा को ठंड से बचा सके.

“जीवन एक संघर्ष है,” उसने धूमिल आकाश से कहा.

फिर एक दिन सुबह की धीमी बहती हवा में सन-ड्रॉप फूलों की सुगंध ने और पक्षियों की चहचहाहट ने वसंत के आगमन की घोषणा की. प्रतिदिन गर्मी बढ़ने लगी और चारों ओर जमी बर्फ पिघलने लगी और पिघलती बर्फ का पानी पहाड़ी से बह कर नीचे नदी की ओर जाने लगा.

"समय हो गया है," एक सुबह कुरा ने अपने पति से कहा. दाई को लाने के लिए युकियो झटपट शिन्जो गाँव की ओर गया. उसी रात कुट्सू का जन्म हुआ. अपनी माँ के समान उसके बाल काले और घने थे और माँ की तरह ही उसकी सुंदर आँखें थीं.

अँधेरे में लेटे-लेटे युकियो ने अपनी पत्नी के शांत चेहरे को देखा. कुट्सू के सांसों की धीमी आवाज़ के साथ-साथ उसे बर्फ के पिघलने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी. पेड़ों से बर्फ के गिरने और नदी की ओर लुढ़कने की आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं. वह जाग रहा था और चिंतित था. वह जानता था कि बर्फ के पिघलने के कारण नदी में बाढ़ आ जायेगी. अगर नदी में पानी बहुत ऊपर चढ़ आया तो बाढ़ में सब कुछ बह जायेगा. युकियो को मन में कोई संशय नहीं था. वह जानता था कि उन्हें वहाँ से जाना ही पड़ेगा.

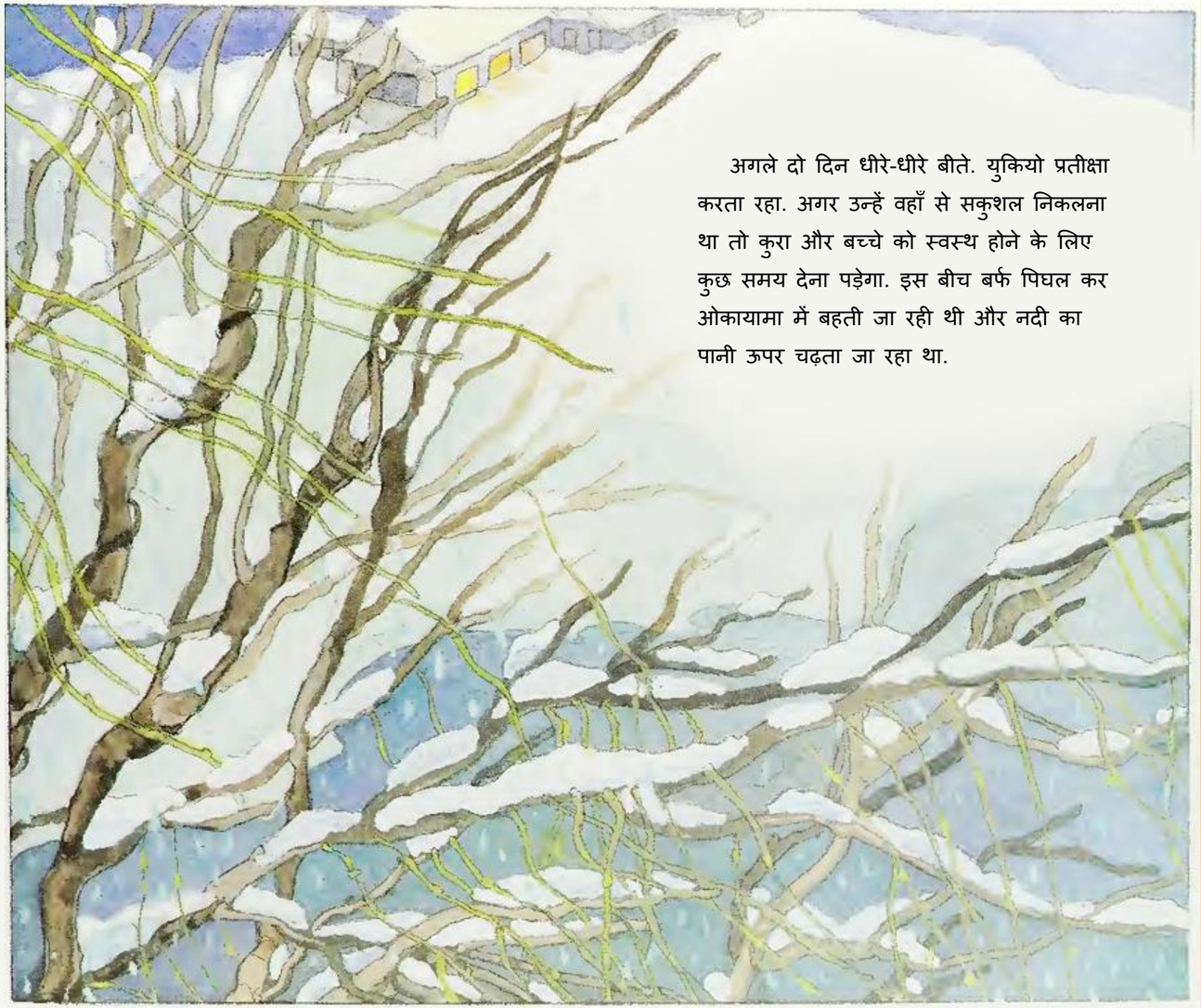

अगले दो दिन धीरे-धीरे बीते. युकियो प्रतीक्षा करता रहा. अगर उन्हें वहाँ से सकुशल निकलना था तो कुरा और बच्चे को स्वस्थ होने के लिए कुछ समय देना पड़ेगा. इस बीच बर्फ पिघल कर ओकायामा में बहती जा रही थी और नदी का पानी ऊपर चढ़ता जा रहा था.

कुट्सू के जन्म के तीन दिन बाद युकियो नदी के किनारे लगे विलो के पेड़ों के पास आया. सिर्फ एक पेड़ खड़ा था. दूसरा पहले पर झुका हुआ था. उसकी अधिकांश जड़ें उखड़ चुकी थीं. उनके आसपास नदी का पानी बहुत तेज़ी से बह रहा थी.

युकियो पेड़ के रस की महक को सूंघ पा रहा था. जो पेड़ उखड़ गया था वह अभी मरा नहीं था. उस पेड़ की डालों पर निकली नई कोंपलों को उसने हौले से छूआ और निराशा में अपना सिर धीरे से हिलाया.

“ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह तुम्हारे जीवन की अंतिम सर्दी थी,” उसने उदासी से कहा.

लेकिन फिर उस उखड़ कर गिरे हुए पेड़ को देख कर उसे गुस्सा आया. उसने उफनती नदी की गर्जन से भी ऊँची आवाज़ में कहा,

“तुम ने ऐसा क्यों किया?” फिर पेड़ों से रोते हुए कहा, “सूखे और बाढ़ और तूफान के साथ संघर्ष में हार जाने के लिए तुम इतने वर्ष तक क्यों फलते-फूलते रहे?”

उसी समय हवा का एक तेज़ झौंका आया और पेड़ों से टकराया. और युकियो को लगा कि जैसे पेड़ उससे कह रहे थे, “देखो, हम कितने विशाल हो गए हैं.”

तभी अचानक उसके कारखाने के ऊपर बर्फ की एक पिघलती दीवार टूट कर नीचे आ गिरी. बर्फ के टुकड़े कारखाने पर गिरे और छत ढह गई. कारखाने में रखे शेल्फ और उन पर रखी मिट्टी की चीज़ें सब तहस-नहस हो गईं और सारा मलबा नीचे नदी की ओर बह गया.

तभी युकियो ने कुरा को देखा. उसने अपनी पीठ पर बच्चे को बाँध रखा था और वह घर के दरवाज़े पर खड़ी थी. तेज़ आँधी से जूझता हुआ वह ऊपर पहाड़ी पर आया. कुरा उसकी ओर आई. आखिरकार वह एक दूसरे के हाथ पकड़ने में सफल हुए. उन्होंने एक-दूसरे को कस कर पकड़े रखा. एक दूसरे के हाथ थामे वह नीचे विलो के पेड़ों के पास आए. एक उन्मादी दैत्य के समान नदी गरज रही थी.

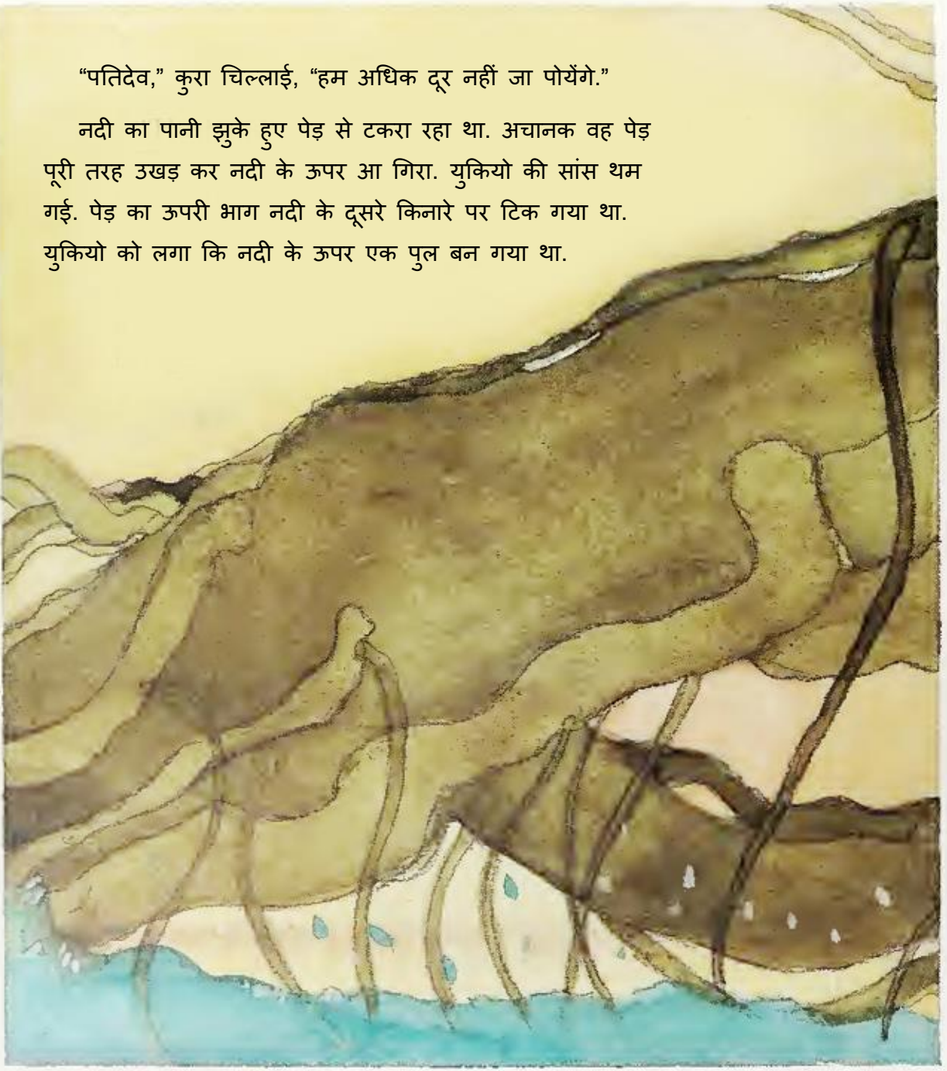

"पतिदेव," कुरा चिल्लाई, "हम अधिक दूर नहीं जा पोयेंगे."

नदी का पानी झुके हुए पेड़ से टकरा रहा था. अचानक वह पेड़ पूरी तरह उखड़ कर नदी के ऊपर आ गिरा. युकियो की सांस थम गई. पेड़ का ऊपरी भाग नदी के दूसरे किनारे पर टिक गया था. युकियो को लगा कि नदी के ऊपर एक पुल बन गया था.

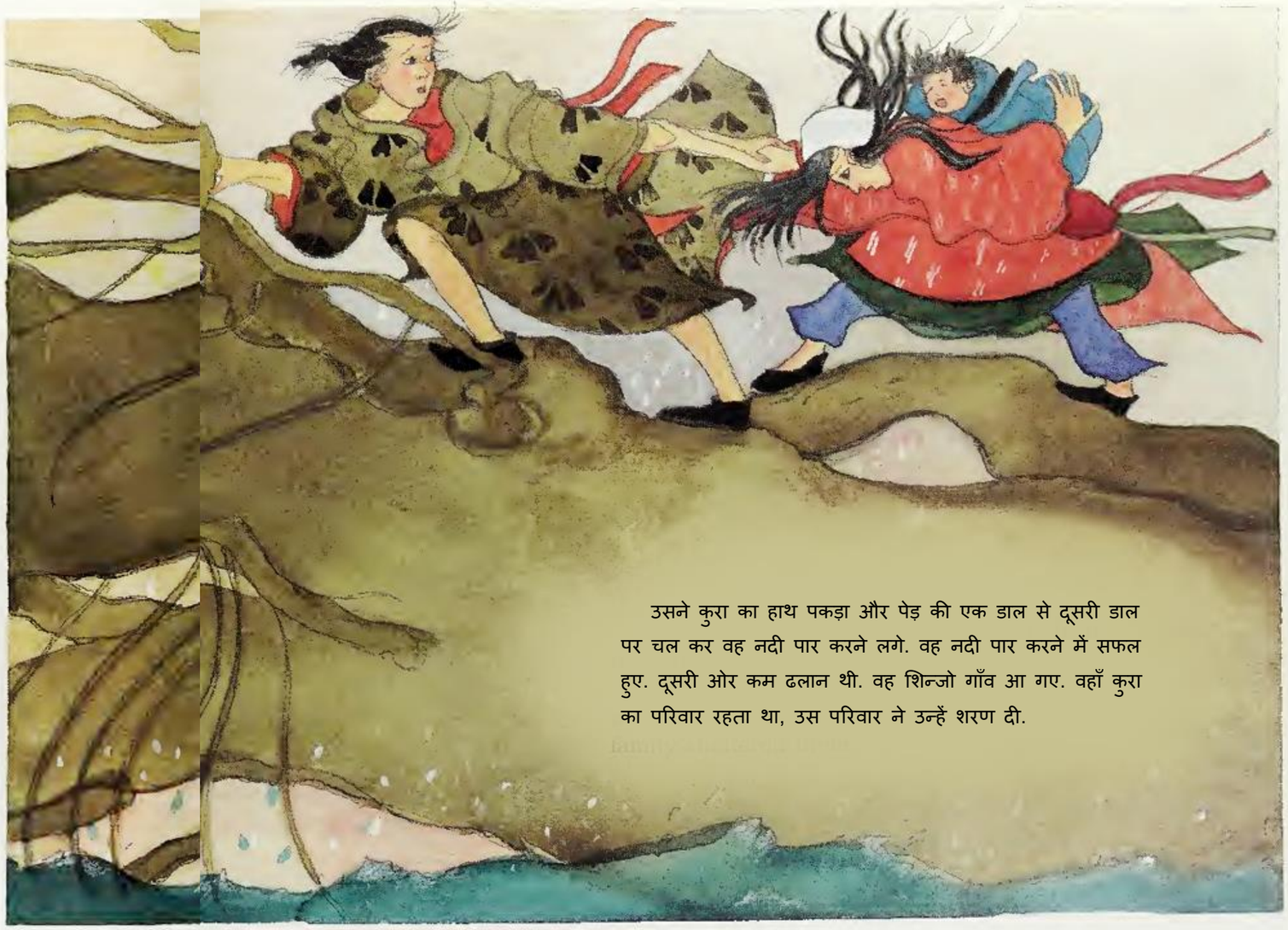

उसने कुरा का हाथ पकड़ा और पेड़ की एक डाल से दूसरी डाल पर चल कर वह नदी पार करने लगे. वह नदी पार करने में सफल हुए. दूसरी ओर कम ढलान थी. वह शिन्जो गाँव आ गए. वहाँ कुरा का परिवार रहता था, उस परिवार ने उन्हें शरण दी.

कई दिनों के बाद नदी के पानी का स्तर घटा. अब पहाड़ी पर वापस जाना संभव हो गया. युकियो और कुरा लौट आए. रास्ते में वह आपस में सलाह करते रहे कि किस प्रकार वह अपना घर और कारखाना और दुकान फिर से बनायेंगे. संध्या के समय वह नदी किनारे पहुँचे. हर ओर मलबा बिखरा पड़ा था और नदी के किनारे के आसपास की जगह इतनी बदल गई थी कि पहचानी न जा रही थी. लेकिन विलो के दोनों पेड़ अभी भी वहीं थे, एक पेड़ खड़ा था और दूसरे के गिरने से नदी के दोनों किनारों के बीच एक पुल बन गया था. युकियो को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जो पेड़ गिर गया था उसकी जड़ें ज़मीन में धंस गई थीं और उसकी डालों पर नन्हे, नर्म पत्ते निकल आए थे.

कुरा ने अपने शिशु को अपनी छाती से चिपका कर पकड़ लिया. युकियो और कुरा आश्चर्य से उस पेड़ के देखते रहे जो अभी भी खड़ा था. एक विशाल छाते के समान वह पेड़ आकाश में फैला हुआ था. उसकी डालों के बीच से संध्या का तारा दिखाई दे रहा था. वसंत के चांद के प्रकाश में पेड़ के पत्ते चमक रहे थे.

युकियो मुस्कराया. नदी किनारे उग रहे नन्हे पौधों का चित्र उसे अभी भी स्मरण था.

“जीवन सदा प्रगतिशील होता है,” उसने अपनी पत्नी और बेटे से कहा.

टाकासामा परिवार बढ़ता गया और उन्नति करता रहा. उनकी बनाई मिट्टी की चीज़ें सारे संसार में प्रसिद्ध हो गईं. नदी के आर-पार गिरा जीवित विलो का पेड़ एक पुल बन गया था. लोग उसी पुल पर चल कर ओकायामा नदी पार करते थे.